

19/11/2022

इतिहास बोलता है।

रक बार की बात है, जब हम स्कूल से घर लौटे तब अचानक मेरे शरीर के चिल्लाने की आवाज आई, मानो कोई उसे मार रहा है।

मम्मी दौड़ती हुई कमरे के अंदर आई और मुझे दस्ते के पास पाया। फिर क्या था ना कुछ बताया ना कुछ पुछा बस पिठ पर दे-दना-दना मारने लगी। मार भी रैसी की मेरे मुँह से रक शब्द भी ना बूँटा।

जैसे-तैसे बड़ी मम्मी को आवाज लगाई तब उन्होंने कहाँ की मेरे शरीर की लड़ाई मुझसे नहीं उनके बेटे से हो रही थी। मैंने मम्मी के ओर शेत-शेत धूरसे से देखा, मानो उनके शरीर का इंतजार कर रही हो। मम्मी बिना कुछ कहे चली गई।

अब मम्मी भी करे तो क्या करे, मेरा इतिहास ही कुछ रैसा रहा है की शक की सुई सीधा मेरे पास आकर ही रुकती है।

वैष्णवी गणेश मंडा

vaishnavi.mandaa@gmail.com.